# १० ठेस

## (पूरक पठन)

*–फणीश्वरनाथ 'रेणु'*

खेती–बारी के समय, गाँव के किसान सिरचन की गिनती नहीं करते। लोग उसको बेकार ही नहीं, 'बेगार' समझते हैं। इसलिए खेत–खलिहान की मजदूरी के लिए कोई नहीं बुलाने जाता है सिरचन को। क्या होगा, उसको बुलाकर ? दूसरे मजदूर खेत पहुँचकर एक–तिहाई काम कर चुकेंगे, तब कहीं सिरचन राय हाथ में खुरपी डुलाता हुआ दिखाई पड़ेगा; पगडंडी पर तौल–तौलकर पाँव रखता हुआ, धीरे–धीरे। मुफ्त में मजदूरी देनी हो तो और बात है।

आज सिरचन को मुफ्तखोर, कामचोर या चटोर कह ले कोई। एक समय था, जब उसकी मड़ैया के पास बाबू लोगों की सवारियाँ बँधी रहती थीं। उसे लोग पूछते ही नहीं थे,उसकी खुशामद भी करते थे। ''अरे, सिरचन भाई ! अब तो तुम्हारे ही हाथ में यह कारीगरी रह गई है सारे इलाके में। एक दिन का समय निकालकर चलो। बड़े भैया की चिट्ठी आई है शहर से–सिरचन से एक जोड़ा चिक बनाकर भेज दो।''

मुझे याद है.. मेरी माँ जब कभी सिरचन को बुलाने के लिए कहती, मैं पहले ही पूछ लेता, ''भोग क्या–क्या लगेगा ?''

माँ हँसकर कहतीं, ''जा–जा बेचारा मेरे काम में पूजा–भोग की बात नहीं उठाता कभी।'' पड़ोसी गाँव के पंचानंद चौधरी के छोटे लड़के को एक बार मेरे सामने ही बेपानी कर दिया था सिरचन ने –''तुम्हारी भाभी नाखून से खाँटकर तरकारी परोसती है और इमली का रस डालकर कढ़ी तो हम मामूली लोगों की घरवालियाँ बनाती हैं। तुम्हारी भाभी ने कहाँ से बनाना सीखी हैं !''

इसलिए सिरचन को बुलाने के पहले मैं माँ से पूछ लेता ...। सिरचन को देखते ही माँ हुलसकर कहती, ''आओ सिरचन ! आज नेनू मथ रही थी तो तुम्हारी याद आई। घी की खखोरन के साथ चूड़ा तुमको बहुत पसंद है न... ! और बड़ी बेटी ने ससुराल से संवाद भेजा है, उसकी ननद रूठी हुई है, मोथी की शीतलपाटी के लिए।''

सिरचन अपनी पनियायी जीभ को सँभालकर हँसता–''घी की सोंधी सुगंध सूँघकर ही आ रहा हूँ, काकी ! नहीं तो इस शादी–ब्याह के मौसम में दम मारने की भी छुट्टी कहाँ मिलती है ?''

### परिचय

**जन्म :** १९२१, पूर्णिया (बिहार)
**मृत्यु :** १९७७
**परिचय :** हिंदी कथाधारा का रुख बदलने वाले फणीश्वरनाथ 'रेणु' जी को आजादी के बाद के प्रेमचंद की संज्ञा दी जाती है। आपकी कहानियों और उपन्यासों में आँचलिक जीवन की धुन, गंध, लय–ताल, सुर–सुंदरता, कुरूपता स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ती है। आपकी भाषा–शैली में एक जादुई असर मिलता है।
**प्रमुख कृतियाँ :** 'मैला आँचल', 'परती परिकथा', 'जुलूस' (उपन्यास), 'एक आदिम रात्रि की महक', 'ठुमरी', 'अच्छे आदमी' (कथा संग्रह), 'ऋण–जल–धनजल', 'नेपाली क्रांतिकथा' (रिपोर्ताज) आदि।

### गद्य संबंधी

प्रस्तुत आंचलिक कहानी बिहार के ग्रामीण जीवन पर आधारित है। इस कहानी के माध्यम से कथाकार ने ग्रामीण जीवन, सामाजिक संबंध, कारीगरी, कारीगरों के स्वाभिमान आदि को बड़े ही सुंदर ढंग से चित्रित किया है।

सिरचन जाति का कारीगर है । मैंने घंटों बैठकर उसके काम करने के ढंग को देखा है । एक-एक मोथी और पटेर को हाथ में लेकर बड़े जतन से उसकी कुच्ची बनाता । फिर कुच्चियों को रँगने से लेकर सुतली सुलझाने में पूरा दिन समाप्त ।... काम करते समय उसकी तन्मयता में जरा भी बाधा पड़ी कि गेहुँअन साँप की तरह फुफकार उठता-''फिर किसी दूसरे से करवा लीजिए काम ! सिरचन मुँहजोर है, कामचोर नहीं ।''

बिना मजदूरी के पेट भर भात पर काम करने वाला कारीगर ! दूध में कोई मिठाई न मिले तो कोई बात नहीं किंतु बात में जरा भी झाला वह नहीं बरदाश्त कर सकता ।

सिरचन को लोग चटोर भी समझते हैं । तली बघारी हुई तरकारी, दही की कढ़ी, मलाईवाला दूध, इन सबका प्रबंध पहले कर लो, तब सिरचन को बुलाओ; दुम हिलाता हुआ हाजिर हो जाएगा । खाने-पीने में चिकनाई की कमी हुई कि काम की सारी चिकनाई खत्म ! काम अधूरा रखकर उठ खड़ा होगा-''आज तो अब अधकपाली दर्द से माथा टनटना रहा है । थोड़ा-सा रह गया है, किसी दिन आकर पूरा कर दूँगा ।'' 'किसी दिन' माने कभी नहीं !

मोथी घास और पटरे की रंगीन शीतलपाटी, बाँस की तीलियों की झिलमिलाती चिक, सतरंगे डोर के मोढ़े, भूसी-चुन्नी रखने के लिए मूँज की रस्सी के बड़े-बड़े जाले, हलवाहों के लिए ताल के सूखे पत्तों की छतरी-टोपी तथा इसी तरह के बहुत-से काम हैं जिन्हें सिरचन के सिवा गाँव में और कोई नहीं जानता । यह दूसरी बात है कि अब गाँव में ऐसे कामों को बेकाम का काम समझते हैं लोग । बेकाम का काम जिसकी मजदूरी में अनाज या पैसे देने की कोई जरूरत नहीं । पेट भर खिला दो, काम पूरा होने पर एकाध पुराना-धुराना कपड़ा देकर विदा करो । वह कुछ भी नहीं बोलेगा ।...

कुछ भी नहीं बोलेगा; ऐसी बात नहीं, सिरचन को बुलाने वाले जानते हैं, सिरचन बात करने में भी कारगर है ।... महाजन टोले के भज्जू महाजन की बेटी सिरचन की बात सुनकर तिलमिला उठी थी-''ठहरो ! मैं माँ से जाकर कहती हूँ । इतनी बड़ी बात !''

''बड़ी बात ही है बिटिया ! बड़े लोगों की बस बात ही बड़ी होती है । नहीं तो दो-तीन पटेर की पाटियों का काम सिर्फ खेसारी का सत्तू खिलाकर कोई करवाए भला ? यह तुम्हारी माँ ही कर सकती है बबुनी !'' सिरचन ने मुस्कराकर जवाब दिया था ।

इस बार मेरी सबसे छोटी बहन पहली बार ससुराल जा रही थी । मानू के दूल्हे ने पहले ही बड़ी भाभी को लिखकर चेतावनी दे दी है-''मानू के

लोक कलाओं के नामों की सूची तैयार कीजिए ।

साथ मिठाई की पतीली न आए, कोई बात नहीं। तीन जोड़ी फैशनेबल चिक और पटेर की दो शीतलपाटियों के बिना आएगी मानू तो ... !'' भाभी ने हँसकर कहा, ''बैरंग वापस !'' इसलिए, एक सप्ताह पहले से ही सिरचन को बुलाकर काम पर तैनात करवा दिया था। माँ ने–''देखो सिरचन ! इस बार नई धोती दूँगी; असली मोहर छापवाली धोती। मन लगाकर ऐसा काम करो कि देखने वाले देखते ही रह जाएँ।''

पान–जैसी पतली छुरी से बाँस की तीलियाँ और कमानियों को चिकनाता हुआ सिरचन अपने काम में लग गया। रंगीन सुतलियों में झब्बे डालकर वह चिक बुनने बैठा। डेढ़ हाथ की बिनाई देखकर ही लोग समझ गए कि इस बार एकदम नये फैशन की चीज बन रही है।

मँझली भाभी से नहीं रहा गया। परदे की आड़ से बोली, ''पहले ऐसा जानती कि मोहर छापवाली धोती देने से ही अच्छी चीज बनती है तो भैया को खबर भेज देती।''

काम में व्यस्त सिरचन के कानों में बात पड़ गई। बोला, ''मोहर छापवाली धोती के साथ रेशमी कुरता देने पर भी ऐसी चीज नहीं बनती बहुरिया। मानू दीदी काकी की सबसे छोटी बेटी है... मानू दीदी का दूल्हा अफसर आदमी है !''

मँझली भाभी का मुँह लटक गया। मेरी चाची ने फुस–फुसाकर कहा, ''किससे बात करती है बहू ? मोहर छापवाली धोती नहीं, मुँगिया लड्डू। बेटी की विदाई के समय रोज मिठाई जो खाने को मिलेगी। देखती है न !''

दूसरे दिन चिक की पहली पाँति में सात तारे जगमगा उठे, सात रंग के। सतभैया तारा ! अपने काम में मगन सिरचन को खाने–पीने की सुध नहीं रहती। चिक में सुतली के फंदे डालकर उसने पास पड़े सूप पर निगाह डाली–चिउरा और गुड़ का एक सूखा ढेला। मैंने लक्ष्य किया, सिरचन की नाक के पास दो रेखाएँ उभर आईं। मैं दौड़कर माँ के पास गया। ''माँ, आज सिरचन को कलेवा किसने दिया है, सिर्फ चिउरा और गुड़ ?''

माँ रसोईघर के अंदर पकवान आदि बनाने में व्यस्त थी। बोली, ''अरी मँझली, सिरचन को बुँदिया क्यों नहीं देती ?''

''बुँदिया मैं नहीं खाता, काकी !'' सिरचन के मुँह में चिउरा भरा हुआ था। गुड़ का ढेला सूप में एक किनारे पर पड़ा रहा, अछूता।

माँ की बोली सुनते ही मँझली भाभी की भौंहें तन गईं। मुट्ठी भर बुँदिया सूप में फेंककर चली गई।

सिरचन ने पानी पीकर कहा, ''मँझली बहुरानी अपने मैके से आई हुई मिठाई भी इसी तरह हाथ खोलकर बाँटती हैं क्या ?'' बस, मँझली भाभी अपने कमरे में बैठकर रोने लगी। चाची ने माँ के पास जाकर कहा– ''मुँह

'देश की आत्मा गाँवों में बसती है,' गांधीजी के इस विचार से संबंधित कोई लेख पढ़िए तथा इसपर स्वमत प्रस्तुत कीजिए।

लगाने से सिर पर चढ़ेगा ही ।... किसी के नैहर-ससुराल की बात क्यों करेगा वह ?''

मँझली भाभी माँ की दुलारी बहू है । माँ तमककर बाहर आई-''सिरचन, तुम काम करने आए हो, अपना काम करो । बहुओं से बतकुट्टी करने की क्या जरूरत ? जिस चीज की जरूरत हो, मुझसे कहो ।''

सिरचन का मुँह लाल हो गया । उसने कोई जवाब नहीं दिया । बाँस में टँगे हुए अधूरे चिक में फंदे डालने लगा ।

मानू पान सजाकर बाहर बैठकखाने में भेज रही थी । चुपके से पान का एक बीड़ा सिरचन को देती हुई इधर-उधर देखकर बोली ''सिरचन दादा, काम-काज का घर ! पाँच तरह के लोग पाँच किस्म की बात करेंगे । तुम किसी की बात पर कान मत दो ।''

सिरचन ने मुस्कराकर पान का बीड़ा मुँह में ले लिया । चाची अपने कमरे से निकल रही थी । सिरचन को पान खाते देखकर अवाक हो गई । सिरचन ने चाची को अपनी ओर अचरज से घूरते देखकर कहा, ''छोटी चाची, जरा अपनी डिबिया का गमकौआ जर्दा खिलाना । बहुत दिन हुए ...।''

चाची कई कारणों से जली-भुनी रहती थी सिरचन से । गुस्सा उतारने का ऐसा मौका फिर नहीं मिल सकता । झनकती हुई बोली, ''तुम्हारी बढ़ी हुई जीभ में आग लगे । घर में भी पान और गमकौआ जर्दा खाते हो ?... चटोर कहीं के !'' मेरा कलेजा धड़क उठा... हो गया सत्यानाश !

बस, सिरचन की उँगलियों में सुतली के फंदे पड़ गए । मानो, कुछ देर तक वह चुपचाप बैठा पान को मुँह में घुलाता रहा फिर अचानक उठकर पिछवाड़े पीक थूक आया । अपनी छुरी, हँसिया वगैरह समेट-सँभालकर झोले में रखे । टँगी हुई अधूरी चिक पर एक निगाह डाली और हनहनाता हुआ आँगन से बाहर निकल गया ।

मानू कुछ नहीं बोली । चुपचाप अधूरी चिक को देखती रही ।... सातों तारे मंद पड़ गए ।

माँ बोलीं, ''जाने दे बेटी ! जी छोटा मत कर मानू ! मेले से खरीदकर भेज दूँगी ।''

मैं सिरचन को मनाने गया । देखा, एक फटी हुई शीतलपाटी पर लेटकर वह कुछ सोच रहा है । मुझे देखते ही बोला, ''बबुआ जी ! अब नहीं । कान पकड़ता हूँ, अब नहीं ।... मोहर छापवाली धोती लेकर क्या करूँगा । कौन पहनेगा ?... ससुरी खुद मरी, बेटे-बेटियों को ले गई अपने साथ । बबुआ जी, मेरी घरवाली जिंदा रहती तो मैं ऐसी दुर्दशा भोगता ? यह शीतलपाटी उसी की बुनी हुई है । इस शीतलपाटी को छूकर कहता हूँ,

**संभाषणीय**

आपकी तथा परिवार के किसी बड़े सदस्य की दिनचर्या की तुलना कीजिए तथा समानता एवं अंतर बताइए ।

अब यह काम नहीं करूँगा ।... गाँव भर में तुम्हारी हवेली में मेरी कदर होती थी । अब क्या ?'' मैं चुपचाप वापस लौट आया । समझ गया, कलाकार के दिल में ठेस लगी है । वह नहीं आ सकता ।

बड़ी भाभी अधूरी चिक में रंगीन छींट का झालर लगाने लगी-''यह भी बेजा नहीं दिखलाई पड़ता, क्यों मानू ?''

मानू कुछ नहीं बोली ।... बेचारी ! किंतु मैं चुप नहीं रह सका-''चाची और मँझली भाभी की नजर न लग जाए इसमें भी !''

मानू को ससुराल पहुँचाने मैं ही जा रहा था ।

स्टेशन पर सामान मिलाते समय देखा, मानू बड़े जतन से अधूरी चिक को मोड़कर लिए जा रही है अपने साथ । मन-ही-मन सिरचन पर गुस्सा हो आया । चाची के सुर-में-सुर मिलाकर कोसने को जी हुआ-'कामचोर, चटोर !'

गाड़ी आई । सामान चढ़ाकर मैं दरवाजा बंद कर रहा था कि प्लेटफॉर्म पर दौड़ते हुए सिरचन पर नजर पड़ी-''बबुआ जी !'' उसने दरवाजे के पास आकर पुकारा ।

''क्या है ?'' मैंने खिड़की से गरदन निकालकर झिड़की के स्वर में कहा । सिरचन ने पीठ पर लदे हुए बोझ को उतारकर मेरी ओर देखा-''दौड़ता आया हूँ !... दरवाजा खोलिए ! मानू दीदी कहाँ हैं ? एक बार देखूँ ।''

मैंने दरवाजा खोल दिया ।

''सिरचन दादा !'' मानू इतना ही बोल सकी ।

खिड़की के पास खड़े होकर सिरचन ने हकलाते हुए कहा, ''यह मेरी ओर से है । सब चीजें हैं दीदी ! शीतलपाटी, चिक और एक जोड़ी आसनी कुश की ।'' गाड़ी चल पड़ी ।

मानू मोहर छापवाली धोती का दाम निकालकर देने लगी । सिरचन ने जीभ को दाँत से काटकर, दोनों हाथ जोड़ दिए ।

मानू फूट-फूटकर रो रही थी । मैं बंडल को खोलकर देखने लगा- ऐसी कारीगरी, ऐसी बारीकी, रंगीन सुतलियों के फंदों का ऐसा काम, पहली बार देख रहा था ।

('फणीश्वरनाथ रेणु की संपूर्ण कहानियाँ' से)

— ० —

महाराष्ट्र में चलाए जाने वाले लघु उद्योगों की जानकारी रेडियो/ दूरदर्शन पर सुनिए और इसके मुख्य मुद्दों को लिखिए ।

## शब्द संपदा

**बेगार** स्त्री.सं.(फा.) = बिना मजदूरी दिए जबरदस्ती लिया गया काम
**मड़ैया** स्त्री.सं.(दे.) = झोंपड़ी
**चिक** पुं.सं.(दे.) = बाँस की तीलियों का बना हुआ परदा
**मोथी** स्त्री.सं.(दे.) = एक प्रकार की घास
**शीतलपाटी** स्त्री.सं.(दे.) = चटाई
**मूँज** स्त्री.सं.(हिं.दे.) = एक प्रकार का तृण/घास
**कलेवा** पुं.सं.(हिं.दे.) = नाश्ता

### मुहावरे

**मुँह लाल होना** = क्रोधित होना
**ठेस लगना** = दुखी होना, बुरा अनुभव होना
**फूट-फूटकर रोना** = जोर-जोर से रोना
**मुँह लटकाना** = निराश होना

## स्वाध्याय

*** सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :-**

**(१) संजाल पूर्ण कीजिए :**

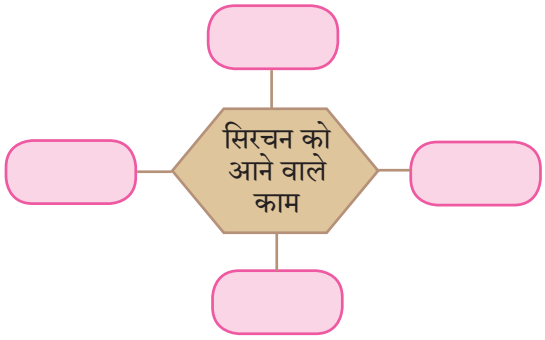


**(२) कृति पूर्ण कीजिए :**

१. सिरचन का मेहनताना

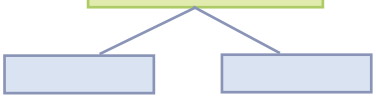

२. मानू को उपहार में मिला

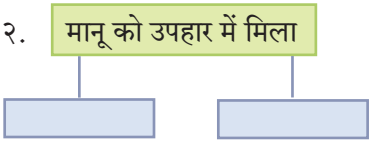

३. सिरचन को लोग कहते

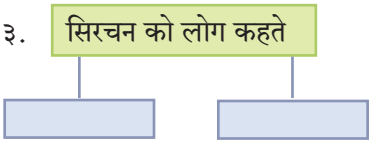

**(३) वाक्यों का उचित क्रम लगाकर लिखिए :**

१. सातों तारे मंद पड़ गए ।
२. ये मेरी ओर से हैं । सब चीजें हैं दीदी ।
३. लोग उसको बेकार ही नहीं, 'बेगार' समझते हैं ।
४. मानू दीदी काकी की सबसे छोटी बेटी है ।

**अभिव्यक्ति**

'कला और कलाकार का सम्मान करना हमारा दायित्व है', इस कथन पर अपने विचारों को शब्दबद्ध कीजिए ।

## भाषा बिंदु

**(१) कोष्ठक की सूचना के अनुसार निम्न वाक्यों का काल परिवर्तन कीजिए :**

- अली घर से बाहर चला जाता है । (सामान्य भूतकाल)
  ----------
- आराम हराम हो जाता है । (पूर्ण वर्तमानकाल एवं पूर्ण भविष्यकाल)
  ----------
- सरकार एक ही टैक्स लगाती है । (सामान्य भविष्यकाल)
  ----------
- आप इतनी देर से नाप-तौल करते हैं । (अपूर्ण वर्तमानकाल)
  ----------
- वे बाजार से नई पुस्तक खरीदते हैं । (पूर्ण भूतकाल एवं अपूर्ण भविष्यकाल)
  ----------
- वे पुस्तक शांति से पढ़ते हैं । (अपूर्ण भूतकाल)
  ----------
- सातों तारे मंद पड़ गए । (अपूर्ण वर्तमानकाल)
  ----------
- मैंने खिड़की से गरदन निकालकर झिड़की के स्वर में कहा । (अपूर्ण भूतकाल)
  ----------

**(२) नीचे दिए गए वाक्य का काल पहचानकर निर्देशानुसार काल परिवर्तन कीजिए :**

| | |
|---|---|
| मानू को ससुराल पहुँचाने मैं ही जा रहा था । | ---- काल |
| सामान्य वर्तमानकाल | ---------- |
| सामान्य भविष्यकाल | ---------- |
| अपूर्ण भविष्यकाल | ---------- |
| पूर्ण वर्तमानकाल | ---------- |
| सामान्य भूतकाल | ---------- |
| अपूर्ण वर्तमानकाल | ---------- |
| पूर्ण भूतकाल | ---------- |
| पूर्ण भविष्यकाल | ---------- |

## उपयोजित लेखन

'पुस्तक प्रदर्शनी में एक घंटा' विषय पर अस्सी से सौ शब्दों में निबंध लेखन कीजिए ।

C1WJFH